

**डॉ. कुमारी प्रियंका**

**HD jain college**

**History department**

**Guest faculty**

**Notes for ug semester v**

**गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण का वर्णन करें।**

गुप्त साम्राज्य (लगभग 320 ई.-550 ई.) भारतीय इतिहास का एक स्वर्णयुग माना जाता है। कला, साहित्य, विज्ञान, धर्म और प्रशासन के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई। किंतु 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह महान साम्राज्य धीरे-धीरे दुर्बल होता गया और अंततः उसका पतन हो गया। इसके पतन के अनेक कारण थे, जिन्हें निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

**1. हूणों का आक्रमण**

- हूण मध्य एशिया के बर्बर जाति के लोग थे जिन्होंने भारत पर कई बार आक्रमण किए।
- स्कन्दगुप्त ने प्रारंभ में उनका सामना किया, परंतु बाद में वे बार-बार भारत में प्रवेश करते रहे।
- हूणों के आक्रमणों से न केवल उत्तरी-पश्चिमी भारत नष्ट हुआ, बल्कि गुप्त साम्राज्य की सैन्य शक्ति भी कमजोर पड़ गई।
- इससे राजस्व स्रोत नष्ट हुए और साम्राज्य की आर्थिक नींव डगमगा गई।

**2. उत्तराधिकार के झगड़े**

- कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त के बाद गुप्त वंश में उत्तराधिकार को लेकर विवाद हुआ।
- कई राजा एक साथ सत्ता के दावेदार बने, जिससे आंतरिक संघर्ष बढ़ा।
- इसने साम्राज्य की एकता और प्रशासनिक स्थिरता को तोड़ दिया।

### 3. विशाल साम्राज्य का नियंत्रण कठिन होना

- गुप्त साम्राज्य बहुत विशाल था – बंगाल से पंजाब और दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ।
- इतने बड़े भूभाग का सुचारु प्रशासन कठिन हो गया।
- प्रांतीय शासक (गवर्नर) धीरे-धीरे स्वतंत्रता की ओर झुकने लगे और केंद्रीय सत्ता कमजोर पड़ गई।

### 4. आर्थिक कारण

- हूणों के आक्रमणों और आंतरिक विद्रोहों से व्यापारिक मार्गों का विनाश हुआ।
  - विदेशी व्यापार घट गया और राज्य की आय में भारी कमी आई।
  - कर-संग्रह में कठिनाई आने से सेना और प्रशासन को वेतन देना कठिन हो गया।
- 

### 5. सामंतवाद का उदय

- गुप्त काल में सामंतवादी प्रवृत्ति बढ़ी।
- प्रांतीय और स्थानीय शासकों को भूमि अनुदान मिलने लगा और वे स्वायत्त होते गए।
- इन सामंतों ने बाद में केंद्र के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, जिससे साम्राज्य का विघटन हुआ।

### 6. धार्मिक असहिष्णुता का उदय

- गुप्त काल के उत्तरार्ध में ब्राह्मणवाद का प्रभाव अत्यधिक बढ़ा और बौद्ध तथा जैन धर्मों की उपेक्षा होने लगी।
- इससे धार्मिक सहिष्णुता का भाव कमजोर पड़ा और जनता में असंतोष फैल गया।

### 7. प्रशासनिक दुर्बलता

- प्रारंभिक गुप्त शासक अत्यंत कुशल प्रशासक थे, किंतु बाद के शासक कमजोर और विलासी हो गए।

## 8. प्रांतीय स्वतंत्रता और छोटे राज्यों का उदय

- गुप्त साम्राज्य के विघटन के बाद बंगाल, मालवा, काठियावाड़, कन्नौज आदि में स्वतंत्र राज्य उभर आए।
- इससे भारत की राजनीतिक एकता भंग हो गई।

## 9. बाहरी शक्तियों का प्रभाव

- हूणों के अलावा मध्य एशिया से अन्य जनजातियाँ भी भारत में प्रवेश करने लगीं।
- उन्होंने उत्तरी भारत में सत्ता स्थापित कर ली, जिससे गुप्तों की प्रभुता समाप्त हो गई।

## 10. प्राकृतिक कारण (संभावित)

- कुछ इतिहासकारों का मत है कि जलवायु परिवर्तन, अकाल या महामारियों ने भी साम्राज्य को कमजोर किया होगा।

## निष्कर्ष

गुप्त साम्राज्य का पतन किसी एक कारण से नहीं, बल्कि अनेक कारणों के संयुक्त प्रभाव से हुआ।

हूणों के आक्रमणों ने उसकी नींव को हिला दिया, जबकि आंतरिक कलह, सामंतवाद और आर्थिक संकट ने उसके पुनरुत्थान की संभावनाओं को समाप्त कर दिया।

6वीं शताब्दी के मध्य तक भारत की एकता टूट गई और अनेक छोटे राज्यों का उदय हुआ।